सम्पादक परिचय

डॉ. त्रिलोचन प्रधान का जन्म कटक जनपद (ओडिशा) के बडवाउवराई ग्राम में हुआ था। पिता महादेव प्रधान एवं माता काञ्चनबाला प्रधान की वे चतुर्थ सन्तान हैं। इनका प्रारम्भिक अध्ययन कटक में हुआ था। बी.ए. के उपरान्त एम.ए. (1998) एवं पीएच.डी. (2003) उपाधि इनको संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई। तदनन्तर इन्होंने 2004 से 2006 तक रानी पद्मावती तारा योगतन्त्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, इन्द्रपुर, शिवपुर, वाराणसी में अंशकालिक प्रवक्ता के रूप में कार्य किया। 2007 से 2009 तक संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोजेक्ट फेलो रहे। 2009 में संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार के अन्तर्गत, संचालित स्वयंशासित संस्था 'इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी' में परियोजना सहायक के रूप में नियुक्त हुए। सम्प्रति परियोजना अनुषङ्गी के रूप में कार्यरत है।.

सम्मान - डॉ. प्रधान को उत्कृष्ट समीक्षात्मक कार्य हेतु " अखिल भारतीय विद्वत् परिषद्" काशी द्वारा 2017 में आनन्दवर्धन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

विशेष दक्षता- नेवारी, शारदा, पुरानी देवनागरी एवं ओडिआ लिपि का ज्ञान।

पता- एन् 2/130, सी-2, प्रज्ञानगर कॉलोनी, सुन्दरपुर, वाराणसी - 221005,

मो. नं.- 9453287877,

ईमेल- tilakchandodishi@gmail.com

लेखक परिचय

डॉ. शैलेन्द्र सिंह सेंगर

पिता का नाम	:	श्री राजेन्द्र सिंह सेंगर
जन्म	:	6, दिसम्बर, 1979
जन्म स्थान	:	सिजारी बुजुर्ग, झाँसी।
शिक्षा	:	बी.ए.एम.एस., एम.डी. (संहिता सिद्धान्त)
वर्तमान पद	:	प्रवाचक एवं विभागाध्यक्ष - संहिता एवं सिद्धान्त विभाग, चन्द्रशेखर सिंह आयुर्वेद संस्थान, कौशाम्बी, प्रयागराज (उ.प्र.)।
अनुभव	:	5 वर्ष
प्रकाशन	:	अनेक शोध लेख प्रकाशित।

CHAUKHAMBHA PUBLICATIONS
NEW DELHI (INDIA)
E-mail- chaukhambhapublication@gmail.com

ISBN : 978-81-957277-2-6

Price ₹ 495.00

MIS 143

संस्कृत एवं आयुर्वेद का इतिहास

सम्पादक : डॉ. त्रिलोचन प्रधान

लेखक : डॉ. शैलेन्द्र सिंह सेंगर

CHAUKHAMBHA PUBLICATIONS

(राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित)

संस्कृत एवं आयुर्वेद का इतिहास

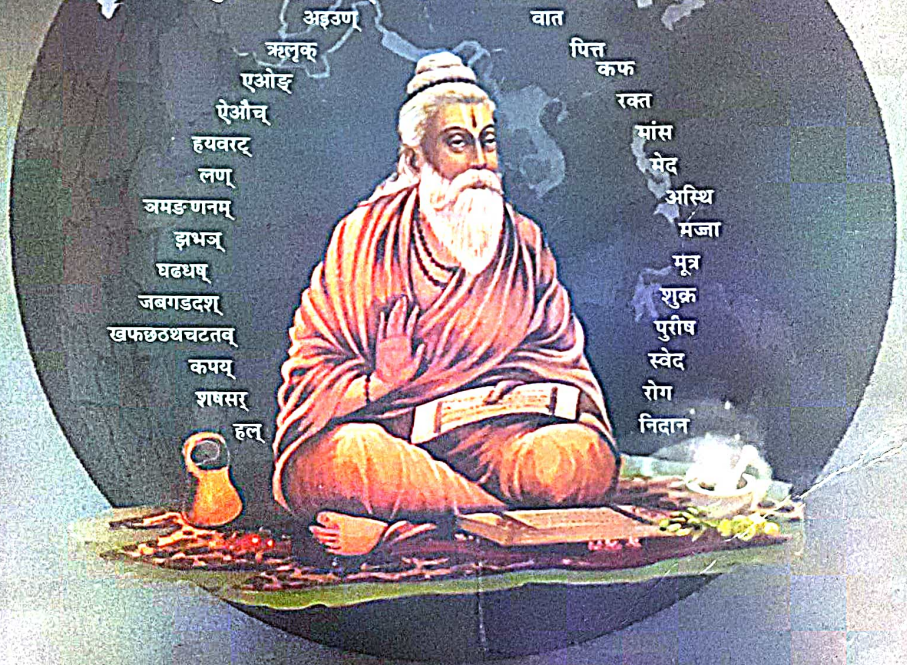

सम्पादक : डॉ. त्रिलोचन प्रधान

लेखक : डॉ. शैलेन्द्र सिंह सेंगर

संस्कृत एवं आयुर्वेद का इतिहास
ISBN : 978-81-957277-2-8

इस ग्रन्थ का मूल-पाठ तथा टीका परिशिष्ट एवं हिन्दी भाषा का सर्वाधिकार प्रकाशन-प्रकाशक के अधीन है। इसका किसी भी भाषा में अनुवाद एवं किसी भी माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना पुनर्मुद्रण व प्रकाशन अवैधानिक होगा।

प्रकाशक
चौखम्भा पब्लिकेशन्स
4262/3 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली - 110002 (भारत)
टेलीफोन : 011-23259050, 41504249
Mob. : 9810451287
E-mail : cpubdel@gmail.com, chaukhambhapublication@gmail.com

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
संस्करण : प्रथम, वि0 सं0 2078 (सन् 2022)
मूल्य : ₹ 525/-

प्रधानशाखा :
चौखम्भा संस्कृत संस्थान
भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक
पोस्ट बाक्स नं. 1139
के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (समीप मैदागिन)
वाराणसी - 221001 (उ0प्र0) भारत
टेलीफोन : 0542-2333445,2335930
E-mail : cssvns@gmail.com

सहयोगी संस्था :
चौखम्भा संस्कृत संस्थान
692/93, रविवारपेठ, कापड़गंज
समीप डी. एस. हाउस, पुणे - 411002 (महाराष्ट्र) भारत
टेलीफोन : 020-24493955, मोबाइल : 09970193955
E-mail : hn.shah@rediffmail.com

मुद्रक : मित्तल ऑफसेट, वाराणसी

प्राक्कथन

आयुर्वेद अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है। आचार्यों ने इसे अनादि और शाश्वत कहा है। शरीर इन्द्रिय मन आत्मा के संयोग को आयु (जीवन) कहते हैं। आयुर्वेद जीवन का शस्त्र है। यह आयु का विज्ञान है आयुर्वेद के सिद्धान्तों का पालन करने से हितकर एवं सुखकर आयु की प्राप्ति होती है। आयुर्वेद सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण एवं जीवन्त अंग रहा है। सृष्टि की रक्षा हेतु ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना से पूर्व ही आयुर्वेद का स्मरण किया था।

किसी भी शास्त्र का विस्तृत अध्ययन करने से पूर्व उसका इतिहास जानना अति आवश्यक होता है। बिना इतिहास की जानकारी के शास्त्र ज्ञान में बाधा उत्पन्न होती है।

लेखक आयुर्वेद चिकित्सक है अतः लेखक ने अपने ग्रन्थों के लेखन कार्यों में सबसे पहले लेखन की शुरुआत आयुर्वेद का इतिहास से प्रारम्भ की है।

इस पुस्तक में आयुर्वेद अवतरण से लेकर वर्तमान समय में संसार के विभिन्न क्षेत्रों एवं अनेक आयुर्वेद चिकित्सकों तक किस परम्परा से प्रचारित हुआ इसका वर्णन प्राप्त होता है एवं इसमें आयुर्वेद के मुख्य ग्रन्थों का आयुर्वेद से जुड़े हुए वैद्यों/शिक्षकों/संस्थाओं का परिचय दिया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति को आयुर्वेद के अध्ययन हेतु एक शुरुआती दिशा प्रदान करेगी और आयुर्वेद के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न करेगी।

आभार

मैं अपनी माताजी श्रीमती सिया देवी एवं पिताजी श्री राजेन्द्र सिंह के साथ-साथ अपनी प्राणवल्लभा धर्मपत्नी श्रीमती मधु सिंह का सदैव ऋणी रहूँगा जिनके द्वारा प्राप्त संस्कारों ने मुझे इस कार्य के योग्य बनाया।

मैं अपने गुरुजनों स्वर्गीय एम.एम. कानूनगो, स्वर्गीय डी.पी. अग्रवाल, परमादरणीय डॉ. हेमन्त सिंह चौहान, प्रोफेसर एस.एन. सिंह, डॉ. शम्भूदयाल शर्मा, डॉ. ए.के. जोशी, डॉ. विमल अरोरा, डॉ. ए.पी.एस. चौहान, डॉ. एम.बी. पिल्लेवान एवं डॉ. प्रवीण मिश्रा के प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगा जिनकी प्रेरणा ने मुझे यह कार्य करने के योग्य बनाया।

मैं डॉ. अशोक गुप्ता, डॉ. आलोक पाण्डेय, डॉ। प्रदीप चौहान, डॉ. मनोज किरार, डॉ. मनीष पटेल, डॉ. अतनु बैरागी, डॉ. अमित सिन्हा, डॉ. अमित विश्वास, डॉ. अमित वर्वे, डॉ. बी.पी. पटेल, डॉ. सौरभ मेहता, डॉ. दीपिका सिंह, डॉ. जयश्री गुप्ता, डॉ. कीर्ति बैण्डवाल, डॉ. पल्सी पाण्डेय, डॉ. आस्था मिश्रा, डॉ. सविता पवार एवं निरूपमा शुक्ला के प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगा। जिनके प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन ने मुझे यह कार्य करने के योग्य बनाया।

लेखन कार्य में मेरा सहयोग एवं दिशा निर्देश देने के लिये डॉ. सुधीर सिंह, डॉ. प्रभात तिवारी, डॉ. प्रवीण मिश्रा, डॉ. जिष्णु नन्दी एवं लोकेन्द्र नामदेव को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिनके कारण पुस्तक लेखन कार्य सुगमता पूर्वक पूर्ण हो सका।

डॉ. शैलेन्द्र सिंह सेंगर